This question paper contains 3 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 5575

Unique Paper Code : 205440 E

Name of the Paper : Hindi B (हिंदी-ख)

Name of the Course : B.A. (Prog.) बी.ए. पाठ्यक्रम

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित अवतरणों की प्रसंगसहित व्याख्या कीजिए :

(क) दुर्भिक्ष मानो देह धर के घूमता सब ओर है, 8

हा ! अन्न ! हा ! हा !अन्न का रव गूँजता घनघोर है !

सब विश्व में सौ वर्ष में, रण में मरे जितने हरे,

जन चौगुने उनसे यहाँ दस वर्ष में भूखों मरे !!

अथवा

क्या लाभ है उन हिस्ट्रियों को कण्ठ करने से भला-

रटते हुए जिनको हमारा बैठ जाता है गला ?

हा ! स्वेद बनकर व्यर्थ ही बहता हमारा रक्त है,

सन्-संवतों के फेर में बरबाद होता वक्त है ॥

P.T.O.

(ख) ..... और जिसके हम विरोधी हैं, उसने अपने आप में ऐसी ताकत पैदा कर ली है कि विरोध के हर रूप को वह हजम कर लेता है ..... लगता है, वही हमारे विरोध का अब संचालन भी करता है ।

अथवा

..... खुद हारकर, फिर अपने एक-एक अंग से लड़ने का नाटक । आत्मन से तेरा कोई संबंध नहीं । वह तुझसे तभी छुट गया, जब तू यहाँ घुसा । उसी के बाद ही मैं जन्मा हूँ । आत्मन, गयादत्त, राजन, केजरीवाल—सबसे अपने चारों ओर नकली लड़ाई का एक चक्रव्यूह ..... । 7

(ग) उन्हें भय था कि वज्जियों के उस विचित्र कानून के अनुसार उनकी कन्या विवाह से वंचित करके कहीं 'नगरवधू' न बना दी जाए । वज्जी गणतन्त्र में यह विचित्र कानून था कि उस गणराज्य में जो कन्या सर्वाधिक सुन्दरी होती थी, वह किसी एक पुरुष की पत्नी न होकर 'नगरवधू' घोषित की जाती थी और उस पर सम्पूर्ण नागरिकों का समान अधिकार रहता था ।

अथवा

आकाश में बादल घिर रहे थे । उनके बीच कभी-कभी चतुर्थी का क्षीणकाय चन्द्र दीख पड़ता था, जिससे रात्रि का अन्धकार थोड़ा प्रतिभासित हो उठता था । एकाध तारे भी कभी-कभी दृष्टिगोचर हो जाते थे । ब्रह्मचारी कभी आँखें बन्द किए और कभी खोलकर देख लेता था । उसका ध्यान गुरुपद की आज्ञा पर था । 8

2. मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' के आधार पर गुप्त जी की राष्ट्रीय-चेतना पर प्रकाश डालिए । 15

अथवा

भारत-भारती के 'वर्तमान खंड' के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त के शिक्षा, साहित्य एवं संगीत संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए ।

3. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक 'मिस्टर अभिमन्यु' के नामकरण की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए । 15

अथवा

" 'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक आज के समाज और राजनीति के कुचक्र में फँसे व्यक्ति की विवशता का सार्थक उदाहरण प्रस्तुत करता है ।" इस कथन की समीक्षा कीजिए ।

4. आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास 'वैशाली की नगरवधू' में स्त्री-पात्रों का परिचय दीजिए । 15

अथवा

'वैशाली की नगरवधू' उपन्यास की प्रमुख समस्याओं पर प्रकाश डालिए ।

5. किसी **एक** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 7

(क) नाट्यभाषा की दृष्टि से 'मिस्टर अभिमन्यु'

(ख) काव्यभाषा की दृष्टि से 'भारत-भारती'

(ग) कथाभाषा की दृष्टि से 'वैशाली की नगरवधू' ।